

## जाट बोर्डिंग हाउस (किसान बोर्डिंग हाउस), जोधपुर

1. छात्रावास का नाम व पता — जाट बोर्डिंग हाउस (किसान बोर्डिंग हाउस), जोधपुर

रजिस्ट्रेशन संख्या — 77/1956-57

स्थापना — 04.04.1927

2. इतिहास — तत्कालीन राजशाही में जागीरदारी प्रथा के दौरान जाटों में शैक्षिक व राजनीतिक जागृति को सहन नहीं किया जाता था और ऐसे विषयों पर चर्चा करने वालों पर अत्याचार होते थे। ऐसी परिस्थितियों के मद्दे नजर सर छोटूराम चौधरी ने चौधरी मूलचन्द तथा चौधरी गुल्लाराम को सलाह दी कि सबसे पहले अशिक्षित किसान/जाटों को शिक्षित करने की योजना बनाकर कार्य करो। शिक्षा से ही किसान सामन्ती ताकतों का मुकाबला कर सकेंगे। तत्कालीन समय में जोधपुर रियासत में शहरी व उच्च जातियों के छात्रों के लिए जाति आधारित स्कूलें थीं जिनको सरकारी अनुदान तथा संरक्षण प्राप्त था। लेकिन माली जाति के अलावा किसान वर्ग की जातियों की स्कूल नहीं थी। बिना सरकारी सहयोग के जाट समाज की स्कूल खोलना तथा संचालन करना असम्भव था क्योंकि जाट आर्थिक तथा शैक्षिक रूप से बहुत पिछड़े हुए थे। ऐसी स्थिति में बलदेव राम मिर्धा, चौधरी गुल्लाराम, भीयाराम चौधरी एवं चौधरी मूलचन्द ने निर्णय लिया कि शहरी क्षेत्र में समाज के छात्रावास स्थापित कर मुफ्त आवासीय व्यवस्था के साथ अच्छे शैक्षणिक वातावरण में छात्रों को सरकारी स्कूलों में अध्ययन करवाया जावे। इसी सोच एवं चिंतन के साथ मारवाड़ में छात्रावास स्थापना की मुहिम संचालित हुई।

सबसे पहले जोधपुर में जाट छात्रावास स्थापित करने की कार्य योजना बनाने हेतु चौधरी गुल्लाराम के रातानाडा स्थित मकान पर चौधरी मूलचन्द, चौधरी भीयाराम सिहाग परबतसर, चौधरी गंगाराम खिलेरी नागौर, बाबू दूधाराम जी तथा मास्टर धारासिंह आदि की प्रथम बैठक हुई। इस बैठक में निर्णय किया गया कि जाट समाज के अधिक लोगों की बैठक फिर आयोजित की जावे। इस निर्णयानुसार 02 मार्च, 1927 को जाट पंचायत नौहरा जाटावास, जोधपुर, में राधाकिशन मिर्धा की अध्यक्षता में करीब 70 जाट सज्जनों की बैठक हुई। इस बैठक में एक समिति का गठन किया गया जिसमें राधाकिशन मिर्धा को अध्यक्ष, रामचन्द्र मिर्धा को मंत्री, रामूराम को उपमंत्री बनाया गया तथा सदस्य के रूप में बलदेव राम मिर्धा, दूधाराम चौधरी, चौधरी गुल्लाराम, भीयाराम चौधरी, देवाराम, पोकरराम, मोतीराम, भूराराम, गेनाराम, मूलचन्द, तेजाराम, राधासिंह, आदि सम्मिलित किये गये। इस बैठक में चौधरी गुल्लाराम ने अपने उद्बोधन में मूलमंत्र रखा “पढ़ो और पढ़ाओ।” मीटिंग में चर्चा के बाद निर्णय किया गया कि शिक्षा कार्यक्रम हेतु धन एकत्र किया जावे। इस आह्वान से 1000 रुपये एकत्रित हुए। सभी बिन्दुओं पर मन्थन करने के पश्चात् जाट छात्रावास की स्थापना का निर्णय हुआ। छात्रावास कहाँ पर स्थापित किया जाये, इस चर्चा के दौरान ही चौधरी गुल्लाराम ने प्रस्ताव रखा कि मेरे रातानाडा स्थित मकान में छात्रावास तत्काल शुरू किया जाये। एक वर्ष के लिए सभी प्रकार का व्यय उन्होंने स्वयं वहन करने का वादा भी किया। इस निर्णय के एक माह बाद चैत्र कृष्णा तृतीया, संवत् 1983 तदनुसार 04 अप्रैल, सन् 1927 को प्रातः 08:00 बजे गुल्लाराम चौधरी के रातानाडा स्थित मकान में प्रथम जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर की स्थापना की गयी। जो आगे चलकर मारवाड़ जाट समाज के उत्थान, शिक्षा एवं समाज सुधार, का मुख्य केन्द्र बना।

मारवाड़ की प्रथम जाट बोर्डिंग हाउस का प्रारम्भ 08 छात्रों से शुरू हुआ था, लेकिन दो वर्ष में ही छात्रों की संख्या बढ़ जाने के कारण पहले इस बोर्डिंग का संचालन महाराज भोपाल सिंह के नोहरे में किराये के मकान में स्थानान्तरित किया गया। फिर भी यह भवन छोटा पड़ रहा था। इस संकट के समाधान हेतु चौधरी गुल्लाराम व अन्य जाट बंधुओं ने तत्कालीन जोधपुर रियासत के एसपी

बलदेव राम मिर्धा से सहयोग के लिए आग्रह किया। बलदेव राम मिर्धा ने शहर में बोर्डिंग हाउस के लिए उपयुक्त भवन के लिए तलाश करवाई तब विजय चौक राम स्नेही संत नृसिंहदास महाराज के सहयोग से बागर रामद्वारा के महन्त सूरत रामजी महाराज से विजय चौक स्थित विशाल भवन को छात्रावास हेतु न्यूनतम मूल्य पर खरीदने का प्रस्ताव महाराज को दिया गया जिसे महाराज ने सहर्ष स्वीकार कर लिया तथा अपना सहयोग भी दिया। उस समय बलदेव राम मिर्धा स्वयं ने दस हजार रुपये (वास्तविक राशि 9999 रुपये) में उपरोक्त विशाल भवन खरीद कर जाट बोर्डिंग हाउस के लिए समर्पित किया। बलदेव राम मिर्धा ने 'किसान शिक्षण संस्थान' का गठन कर संस्थान को रजिस्टर्ड करवाया जिसके अधीन जाट बोर्डिंग हाउस छात्रावास का संचालन किया जाने लगा। सन् 1929 के मध्य में ही जाट बोर्डिंग हाउस का नागौरी गेट के अन्दर स्थित इस भवन में संचालन शुरू हुआ। बेचान पश्चात् इस भवन व भूमि का पट्टा प्रेसिडेंट जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर के नाम से लेने के लिये जोधपुर रियासत के कोष में 3951 रुपये जमा करवाकर 05 अक्टूबर 1934 को पट्टा जारी करवाया। बलदेव राम मिर्धा के प्रयासों से जोधपुर रियासत के कोष से 01 जुलाई, 1929 से ही 100 रुपये का मासिक आर्थिक अनुदान भी स्वीकृत हुआ। छात्रों की संख्या बढ़ने के कारण एक वर्ष के बाद ही अनुदान राशि 100 रुपये से बढ़ाकर 150 कर दी गयी।

विजय चौक, नागौरी गेट के अन्दर स्थित छात्रावास का विशाल भवन 2384 वर्ग गज भूखण्ड पर बना हुआ है जिसके तीन तरफ सड़क तथा उत्तर पूर्व में फतेह सागर तालाब की नहर है। इस भवन में भूतल मंजिल पर आवासीय कमरों के साथ चार खुल्ले भाग भी हैं। भवन के चार अलग-अलग हिस्सों की दूसरी मंजिल पर भी कमरे बने हुए हैं। रसोई कक्ष के साथ बड़ा भोजन कक्ष है। वर्तमान में प्राचीन भवन होने कारण अब वहां पर छात्रों की संख्या कम ही है।

तत्कालीन समय में ग'ामीण विद्यार्थियों के लिए शिक्षा ग'हण करना कठिन था, इसलिए 'जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर' में किसान वर्ग की सभी जातियों के छात्रों को बिना भेदभाव प्रवेश दिया जाता था। इसी बात को महत्त्व देते हुए बलदेव राम मिर्धा ने प्रस्ताव दिया कि जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर का नाम किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर कर दिया जाये। इसलिए कालांतर में इस संस्थान का नाम किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर किया गया। तत्कालीन राजशाही दौर में किसान वर्ग विशेषकर जाटों में शिक्षित लोगों की कमी थी क्योंकि रियासत में जाटों के पढ़ने को जागीरदार अपराध मान अत्याचार करते थे। ऐसी स्थिति में सुयोग्य शिक्षित व्यक्ति की जाट बोर्डिंग हाउस के संचालन हेतु बलदेव राम मिर्धा ने आवश्यकता महसूस की। एक बार बलदेव राम मिर्धा उत्तर प्रदेश के गढ़मुक्तेश्वर में आयोजित जाट सम्मेलन में भाग लेने गये जहाँ पर एक युवक के ओजस्वी उद्बोधन को सुन कर बहुत प्रभावित हुए। सम्मेलन समाप्त होने पर उन्होंने रघुवीर सिंह तेवतिया नामक उस युवक को मारवाड़ में जाट बोर्डिंग संचालन हेतु प्रस्ताव दिया जिसे उन्होंने कुछ समय पश्चात् स्वीकार किया तथा 04 फरवरी, 1933 को उनका जोधपुर आगमन हुआ। उनको शुरू में 13 फरवरी 1933 को बोर्डिंग हाउस के सहायक मैनेजर और छः माह बाद जुलाई, 1933 में जनरल मैनेजर पद पर नियुक्त किया। रघुवीर सिंह को धीरे-धीरे पूरे मारवाड़ के जाट बोर्डिंग हाउस में सहयोग करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया जिसे उन्होंने जीवनपर्यंत निभाया। किसान बोर्डिंग हाउस जोधपुर एवं अन्य सभी जाट छात्रावासों के संचालन में रघुवीर सिंह तेवतिया का प्रमुख योगदान रहा इसलिए कालान्तर में रघुवीर सिंह की मारवाड़ जाट समाज में पहचान मास्टर रघुवीर सिंह के नाम से हो गयी।

मास्टर रघुवीर सिंह ने मारवाड़ के सभी परगनों में जाट छात्रावासों की व्यवस्था संचालन में ही नहीं किसान वर्ग में सामाजिक चेतना जागृत करने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनकी प्रतिबद्धता ही थी कि शिक्षा के साथ-साथ छात्रावासों के छात्रों के मानसिक तथा शारीरिक विकास का पूरा ध्यान रखा गया।

मास्टर रघुवीर सिंह तत्क्षण निर्णय लेने वाले व्यक्तित्व के धनी थे इसलिए किसान वर्ग के छात्रों में बहुत ही सम्माननीय थे। एडवोकेट हेमसिंह चौधरी (भाकल) नागौर, जिन्होंने सन् 1946 से 1953 तक जोधपुर किसान बोर्डिंग हाउस में रहकर अध्ययन किया था, उन्होंने किसान केसरी बलदेव राम मिर्धा स्मारिका (2011, 17 जनवरी) में प्रकाशित अपने संस्मरणा में लिखा है कि किसान छात्रावास की एक मीटिंग में चर्चा चली कि मारवाड़ में सामंतों/राजपूतों के अलावा अन्य किसान तथा कामगार जाति के लोग अपने नाम के साथ 'सिंह' का प्रयोग नहीं कर सकते। इसी चर्चा के दौरान बोर्डिंग के जनरल मैनेजर मास्टर रघुवीर सिंह तेवतिया ने तत्काल ही सुझाव दिया कि जिन छात्रों ने मैट्रिक परीक्षा के परीक्षा फार्म नहीं भरे हैं उनके नाम आसानी से बदले जा सकते हैं। नौवीं अथवा अन्य कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्र जो अपने नाम में परिवर्तन करना चाहते हैं, उनके नाम में संशोधन स्कूल में ही करा दिया जायेगा। वहीं उपस्थित बलदेव राम मिर्धा ने इसकी स्वीकृति तुरन्त प्रदान कर दी। एडवोकेट हेमसिंह चौधरी के अनुसार उनका नाम हेमराम था जिसे हेमसिंह कर दिया गया तथा अन्य कई तत्कालीन नौवीं तथा निचली कक्षा के छात्रों के नामों में 'सिंह' लगा कर संशोधन किया गया, जिनमें सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के पूर्व जज एवं मानवाधिकार आयोग, राजस्थान के अध्यक्ष अमरसिंह गोदारा (अमराराम से), पूर्व विधायक रामसिंह कुड़ी (रामदेव से) तथा पूर्व मंत्री रामसिंह विश्नोई (रामलाल से) महत्वपूर्ण परिवर्तित नाम हैं। इस निर्णय से यहाँ पर ही नहीं मारवाड़ के अन्य छात्रावासों में रहने वाले छात्रों ने अपने नाम के साथ सिंह का उपयोग करना शुरू किया।

बलदेव राम मिर्धा की दूर दृष्टि से 1930 ई. से लेकर देश की आजादी तक जाट छात्रावासों की शृंखला अलग-अलग परगनों में स्थापित हो गयी। आजादी के पश्चात् प्रशासनिक व्यवस्थाएँ बदल गयीं, इसलिए मारवाड़ के सभी जिलों में स्थित जाट/किसान बोर्डिंग हाउसों का संचालन तथा राजस्थान सरकार से राजकीय अनुदान प्राप्त करने हेतु किसान बोर्डिंग हाउस, नागौरी गेट जोधपुर के तहत मारवाड़ के सभी जाट छात्रावासों का पंजीयन कराने के लिए संस्थान का विधिवत संविधान बनाया गया तथा रजिस्ट्रार, संयुक्त स्टोक कम्पनीज, जयपुर (राजस्थान) के यहाँ पर 1956 में आवेदन किया। किसान बोर्डिंग हाउस, विजय चौक, नागौरी गेट, जोधपुर का पंजीयन तत्कालीन संस्थान (समिति) पंजीयन कानून, 1860 के अन्तर्गत किया गया जिसकी पंजीयन सं'या 77/1956-57 थी। पंजीयन दस्तावेज एवं किसान बोर्डिंग हाउस के संविधान के अनुसार उस समय मारवाड़ में अलग-अलग स्थानों पर स्थित 16 बोर्डिंग/छात्रावासों को उपशाखाओं के रूप में स्वीकार किया गया। इस पंजीकृत मु'य संस्था की प्रथम प्रबन्ध कार्यकारिणी में चौधरी गुल्लाराम— अध्यक्ष; पूनमचन्द विश्नोई एवं महन्त नृसिंहदास महाराज — उपाध्यक्ष; मंगनीराम लेहरीराम जी — कोषाध्यक्ष; ठेकेदार दौलत राम — सदस्य थे। संरक्षक मंडल में भोम सिंह ठेकेदार (माली), जाल्लूराम जी वकील (प्रजापत), चौधरी जेठमल जी एवं उम्मेद राम खोजा ठेकेदार थे। मास्टर रघुवीर सिंह जनरल मैनेजर को पदेन सचिव नियुक्त किया गया। शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में चौधरी मुन्शी सिंह (इंजीनियर) तथा चौधरी आईदानराम (संयुक्त रजिस्ट्रार, सहकारिता विभाग) नामजद किये गये।

पंजीयन की प्रक्रिया पूर्ण होने के पश्चात् प्रबन्ध कार्यकारिणी के निर्णयानुसार 'किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर' मु'य संस्थान एवं उपशाखाओं का शिक्षा विभाग में पंजीयन हेतु 16 अक्टूबर 1956 ई. को शिक्षा निदेशक, बीकानेर, राजस्थान सरकार को प्रतिवेदन मय संलग्न दस्तावेज प्रस्तुत किया गया। 22 अक्टूबर 1956 ई. को तत्कालीन शिक्षा निदेशक, बीकानेर ने किसान बोर्डिंग हाउस को शिक्षा विभाग में शैक्षणिक संस्थानों के रूप में पंजीकृत करने के आदेश जारी किये। तत्कालीन किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर मु'यालय के साथ निम्न उपशाखाएँ पंजीकृत थीं —

(1) सार्वजनिक बोर्डिंग हाउस, पीपाड़ (2) किसान बोर्डिंग हाउस, नागौर (3) किसान बोर्डिंग हाउस, मेड़ता (4) किसान बोर्डिंग हाउस, परबतसर (5) किसान बोर्डिंग हाउस, डीडवाना (6) किसान बोर्डिंग हाउस, मारोठ (7) किसान बोर्डिंग हाउस, खिंवरसर (8) किसान बोर्डिंग हाउस, छोटी खाटू (9) किसान बोर्डिंग हाउस, कोलिया (10) किसान बोर्डिंग हाउस, जालोर तथा (11) किसान बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर। मुख्य संस्थान किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर के संविधानानुसार सभी छात्रावासों के संचालन हेतु स्थानीय प्रबन्ध समितियाँ अधिकृत थीं। किसान बोर्डिंग हाउस जोधपुर व अन्य छात्रावासों के लिए नियमित कर्मचारी शिक्षा विभाग के अनुमोदन पश्चात् नियुक्त किये जाते थे। कर्मचारियों के वेतन भुगतान हेतु राज्य सरकार से 80 प्रतिशत अनुदान नियमित रूप से मिलता था। सन् 2011 में निजी क्षेत्र की शिक्षण संस्थानों के अनुदानित वेतन भोगी कर्मचारियों का राज्य सरकार के शैक्षणिक संस्थानों में समायोजन पश्चात् किसान बोर्डिंग हाउस के कर्मचारियों को दिया जाने वाला अनुदान भी बन्द कर दिया गया।

जोधपुर सरदार इन्फेन्ट्री के जाट सैनिकों का योगदान

मारवाड़ में जाट छात्रावासों की स्थापना के पश्चात् उनके संचालन एवं निरंतर विकास हेतु आर्थिक तंगी रहती थी। ऐसे में उस समय राजकीय सेवा में कार्यरत जाट बन्धुओं से मासिक आर्थिक सहयोग लिया जाता था। उस समय जाट कर्मचारियों में सबसे अधिक रेलवे में थे। जोधपुर सरदार इन्फेन्ट्री में भी पर्याप्त संख्या में जाट सैनिक कार्यरत थे। राजशाही समय में जोधपुर रियासत में राजपूतों को ही सेना में भर्ती किया जाता था तथा सेना अधिकारी भी राजपूत ही होते थे। दूसरी तरफ अंग्रेजी हुकूमत के अधीन भारतीय सेना में सभी जातियों के लोग भर्ती किये जाते थे। जोधपुर रियासत में सन् 1922 तक प्रशासनिक बागडोर सर प्रताप के हाथों में थी। सर प्रताप को कुछ सामन्ती जागीरदारों से विद्रोह की आशंका हुई तब उन्होंने सरदार इन्फेन्ट्री में जाटों की भर्ती की राह खोल दी। इस तरह जोधपुर रियासत की सेना में जाटों को भर्ती किया जाने लगा। इसमें केप्टिन जेताराम, केप्टिन गोपाल सेन, गिरधारी राम पचार, गणेशराम पूनिया, भोमाराम हवलदार, मेजर बिरमाराम, सूबेदार पन्नाराम ढींगसरी की जानकारी प्राप्त हो सकी है। सन् 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध की आग भड़की तब अंग्रेज सरकार ने देशी रियासतों से अतिरिक्त सैनिकों की मांग की। इस दौरान जोधपुर दरबार से भी अतिरिक्त सैनिकों की मांग की। इस दौरान जोधपुर दरबार ने सरदार इन्फेन्ट्री द्वितीय गठित कर बड़ी संख्या में जाटों की भर्ती कर एक जाट कम्पनी का गठन किया। सैनिकों को आवश्यक ट्रेनिंग के पश्चात् सरदार इन्फेन्ट्री द्वितीय को इटली भेजा गया और बाद में जापान बोर्डर पर भेज दिया गया। जाट फौजियों ने अपनी बहादुरी से द्वितीय विश्व युद्ध में रण कौशल से अंग्रेज अफसरों का दिल जीत लिया। युद्ध के दौरान भी जाट सैनिक पूर्व की भांति जाट छात्रावासों के लिए अपना मासिक सहयोग देते रहे। युद्ध के दौरान जाट सैनिकों ने शिक्षा के महत्त्व को और गहराई से समझा।

रियासत की सेना में राजपूत अफसरों के भेदभाव से जाट फौजियों की उपेक्षा होती थी और पदोन्नति के भी अवसर नगण्य होते थे। विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् बदलते वातावरण में जाट सैनिकों ने जोधपुर दरबार से मांग की कि जिस तरह राजपूत छात्रों के लिए चौपासनी स्कूल व बोर्डिंग है वैसी ही व्यवस्था जाट छात्रों के लिए की जावे। सेना में पदोन्नति के समान अवसर प्रदान किये जाये। जाट सैनिकों की मांगों से जागीरदार तथा राजपूत सैनिक अधिकारी खफा थे लेकिन तत्कालीन जोधपुर दरबार उम्मेदसिंह जन हितैषी राजा थे इसलिए इन्होंने जाट सैनिकों तथा जाट बन्धुओं के प्रतिनिधिमण्डल से मिलने हेतु 15 सितम्बर 1946 ई. को समय निश्चित किया। निर्धारित समय पर मास्टर रघुवीर सिंह (जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर के जनरल मैनेजर) के नेतृत्व में जाट सैनिकों का प्रतिनिधि मण्डल दरबार से मिला। इस बैठक में महाराजा उम्मेद सिंह ने निर्णय लिया कि चौपासनी

जैसी ही स्कूल व बोर्डिंग हाउस जाटों के लिए अविलम्ब सूरसागर पैलेस (पुरानी रेजीडेन्सी) में अस्थाई तौर पर प्रारम्भ कर दी जाएगी। किसान छात्रावास, जोधपुर के पूर्व छात्र मेजर बदन सिंह चौधरी (पचार) ने अपने साक्षात्कार में दिनांक 9 अगस्त 2021 को बताया कि उपरोक्त निर्णयानुसार तत्काल ही जाट स्कूल अस्थाई रूप से सूरसागर पैलेस में शुरू हो गयी तथा इसमें प्रथम प्रवेश लेने वाले छात्रों में वे तथा जाट बोर्डिंग हाउस के करीब 30 छात्र थे। उनके अनुसार जागीरदारों के घोर विरोध के कारण दरबार ने अपना निर्णय बदल दिया और अस्थाई जाट स्कूल बन्द हो गया। दरबार ने जाटों से पुनः वार्ता करने से भी इंकार कर दिया। अब जाट सैनिकों में असंतोष चरसीमा पर था। इधर कमांडेंट कर्नल राम सिंह के अत्याचार जाट सैनिकों पर बढ़ते जा रहे थे। दूसरी तरफ 13 मार्च 1947 ई. को डीडवाना के गाँव डाबड़ा में किसान सम्मेलन से पूर्व पाँच किसानों की हत्या से जाट सैनिकों में एक जलजला पैदा हो गया।

जाट सैनिकों ने 16 मार्च 1947 ई. को अपनी मांगें मनवाने के लिए भूख हड़ताल प्रारम्भ कर दी। कुछ इतिहासकार इस तिथि को मई 1947 की बताते हैं। तत्पश्चात् जाट सैनिकों को धोखे से निःशस्त्र कर बातचीत का वादा कर इकट्ठा किया और फिर बन्दी बनाकर बर्खास्त कर दिया गया। जाट सैनिकों की यह सं'या करीब 800 थी जिन्होंने अपने व समाज के बच्चों की शिक्षा प्राप्ति के हक की लड़ाई में राजशाही हकूमत से सीधी लड़ाई लड़ी और नौकरियों का बलिदान किया। जाट सैनिकों को निकालने में सबसे अहम् भूमि तत्कालीन रियासत के बि'गेडियर जबर सिंह की थी। जोधपुर रियासत से बर्खास्त कई सैनिक बाद में भारतीय सेना में भर्ती हो गये जिनमें मेजर मंगनी राम मिर्धा का नाम उल्लेखनीय है जो कि बाद में सोल्जर बोर्ड के सचिव रहे।

केप्टिन जेताराम (बापा, डीडवाना) तथा केप्टिन गोपालसेन, (जोधपुर) जैसे फौजियों की प्रेरणा से जाट सैनिकों ने जाट बोर्डिंग हाउस (जोधपुर, नागौर, बाड़मेर तथा मेड़ता) को समय-समय पर भरपूर आर्थिक सहयोग दिया।

मास्टर चौधरी रघुवीरसिंह (किसान बोर्डिंग, जोधपुर के जनरल मैनेजर)

आजादी से पूर्व जब दुनिया में शिक्षा का प्रसार प्रगति कर रहा था उस समय भारत इसमें काफी पीछे था और तत्कालीन मारवाड़ तो अति पिछड़ा क्षेत्र था। यहाँ पर राजाशाही में निरंकुश जागीरदारी प्रथा के चलते किसानों व पिछड़ों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। उस समय किसान केसरी बलदेव राम मिर्धा की प्रेरणा से चौधरी मास्टर रघुवीर सिंह उत्तर प्रदेश से जोधपुर आये। वे अपने जीवन को यहाँ के किसानों की शिक्षा के लिए समर्पित कर अन्तिम साँस तक यहाँ ही के होकर रह गये।

जीवन परिचय

मास्टर रघुवीर सिंह का जन्म 5 जनवरी 1905 को गाँव दुहाई, तत्कालीन तहसील गाजियाबाद जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम घासी राम तेवतिया था। कुछ दस्तावेजों में इनके पिता का नाम घसीठा सिंह भी लिखा हुआ है। जबकि 1962 ई. के एक दस्तावेज में मास्टर साहब ने स्वयं अपने पिता का नाम घासी राम लिखा है। इनकी माता का नाम सुधी देवी था। वे तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। रघुवीर सिंह पढ़ने में शुरू से ही प्रतिभाशाली थे तथा 19 वर्ष की आयु में शादी से पूर्व ही इन्होंने विज्ञान में स्नातक की उपाधी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। इनको अंग्रेजी, परसीयन व उर्दू भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। अध्ययन के बाद इस प्रतिभाशाली युवक का चयन बि'टिश काल के केन्द्रीय लोक सेवा आयोग में हुआ तथा वे दो वर्ष सेवा में रहे लेकिन एक बि'टिश अधिकारी से अनबन होने पर उन्होंने नौकरी छोड़ दी। इसके बाद इन्होंने भारत पेट्रोलियम के बम्बई कार्यालय में मैनेजर पद पर नियुक्ति प्राप्त की। लेकिन कुछ समय पश्चात् वे अपनी कौम के कल्याण कार्यों में भागीदारी

निभाने हेतु पुनः मेरठ गये । यहाँ पर वे शिक्षा के लिए युवाओं को प्रेरित करने के साथ किसान समस्याओं का भी अध्ययन कर उनके निराकरण हेतु सम्मर्पित भाव से लग गये। इनकी दृढ़ मान्यता थी कि जाट व किसान का उत्थान तब ही सम्भव होगा जब इनके बच्चे (लड़का/लड़की) शिक्षित होंगे। कुछ ही समय में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इन्होंने जाट सभा के माध्यम से शिक्षा की अलख जगा दी, साथ ही साथ समाज सुधार के कार्य भी करने लगे।

1931 के दिसम्बर माह में गंगा कार्तिक स्नान के अवसर पर इन्होंने गढ़मुक्तेस्वर में जाट सभा के बैनर तले समाज की एक बड़ी रैली की तथा सभा में शिक्षा के महत्त्व व समाज सुधार पर ओजस्वी सम्बोधन दिया। इस प्रभावशाली व्याख्यान से वहाँ उपस्थित सभी लोग बहुत प्रभावित हुए। संयोग से इस सभा में किसान केसरी बलदेव राम मिर्धा भी उपस्थित थे और वे भी रघुवीर सिंह भाषण से अत्यधिक प्रभावित हुए। सभा के बाद में इन्होंने रघुवीर सिंह से मारवाड़ में जाटों की स्थिति व शिक्षा के सम्बन्ध में चर्चा की तथा इनको मारवाड़ चलने का निमंत्रण भी दिया। उस समय तो रघुवीर सिंह जी ने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। लेकिन बलदेव राम ने इस युवा में जाट समाज के प्रति सेवा के जज्बे को पहचान लिया था, इसलिए कुछ समय बाद मिर्धा जी ने इनके बड़े भाई सूबेदार दरियाव सिंह के माध्यम से पुनः रघुवीर सिंह को मारवाड़ आने का न्योता दिया। इस बार रघुवीर सिंह ने मारवाड़ में जाट समाज के लिए शिक्षा के केन्द्र बोर्डिंग हाउस, जोधपुर को सम्भालने की हामी भर ली।

4 फरवरी 1933 को चौधरी रघुवीर सिंह का जोधपुर आगमन हुआ। तत्पश्चात् 13 फरवरी को ही इनको जोधपुर स्थित किसान बोर्डिंग हाउस (तत्कालीन जाट बोर्डिंग हाउस) का सहायक मैनेजर नियुक्त किया गया। जुलाई 1933 ई. में रघुवीर सिंह को बोर्डिंग हाउस के जनरल मैनेजर के पद पर नियुक्त किया गया। इसके बाद रघुवीर सिंह को धीरे-धीरे मारवाड़ के समस्त जाट बोर्डिंग हाउसों के संचालन में सहयोग करने का जिम्मा भी दिया गया। 1934 ई. में तत्कालीन रियासत सरकार ने मारवाड़ के सभी जाट बोर्डिंग हाउसों को सहायता राशि प्रदान करने की शुरुआत की। इस सहायता राशि को सभी संस्थानों को वितरित करने का कार्य भी रघुवीर सिंह सम्भालते थे। यहाँ से ही रघुवीर सिंह मारवाड़ के जाट समाज में मास्टर साहब के नाम से प्रसिद्ध हो गये। समाज के प्रबुद्ध जनों के साथ गाँव-गाँव का दौरा कर छात्रावासों के लिये धन संग्रह का कार्य भी वे करते थे। साथ ही समाज के लोगों को बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रेरित करते थे। इनके प्रेरित करने वाले भाषणों से ही सम्पूर्ण मारवाड़ में चौधरी गुल्लाराम, चौधरी मूलचन्द, चौधरी भीयाराम, चौधरी रामदान आदि को शिक्षा प्रसार के कार्य में बड़ा सहयोग मिलता था। नाथूराम मिर्धा, पूनमचन्द विश्नोई, परसराम मदेरणा, राम सिंह विश्नोई, खेमाराम पटेल, रामनारायण चौधरी, चौधरी लालसिंह आदि कई प्रतिभाशाली छात्रों ने इनके संरक्षण में शिक्षा प्राप्त की थी। आगे चल कर उपर्युक्त सभी बन्धुओं ने किसान समाज की बड़ी सेवा की। अपना जन्म स्थान व घर-बार छोड़ कर समाज सेवा करने का ऐसा उदाहरण मिलना मुश्किल है। वे छात्रों के प्रति बड़ा स्नेह रखते थे, परन्तु अनुशासन तोड़ने वालों से सख्ती से पेश भी आते थे। समयबद्धता व नियमों का मास्टर साहब कड़ाई से पालन करते थे। किसान बोर्डिंग हाउस के संचालन में इनको सहयोग करने वाले मुख्यतः महाराज नृसिंह दास, एडवोकेट जालू राम प्रजापत, मास्टर भंवरलाल जोशी, मास्टर टीकम सिंह टाक तथा लादूराम ग्वाला आदि प्रमुख थे।

रघुवीर सिंह जी की धर्म पत्नी का नाम नारायणी कौर था जो संगवान गौत्र की थी। इनके एक पुत्री विजयलक्ष्मी थी जो आयुर्वेदाचार्य थीं। जीवन पर्यन्त मास्टर साहब किसान बोर्डिंग हाउस में एक ही कमरे में आवास करते रहे। इनका जीवन बहुत ही सादगी पूर्ण था। मास्टर रघुवीर सिंह का स्वर्गवास 25 जनवरी 1975 को हुआ था।

मास्टर रघुवीरसिंह के बाद किसान बोर्डिंग, जोधपुर की व्यवस्थाएँ लम्बे समय तक सुचारु रूप से संचालित नहीं हो पाई और वर्तमान में प्राचीन धरोहर तथा उसकी व्यवस्थाएँ खस्ता हालत में हैं ।

### **रामगढ़ी छात्रावास, कागा (तत्कालीन बालसेवा सदन), जोधपुर**

आजादी के पश्चात् जोधपुर किसान बोर्डिंग हाउस (जाट बोर्डिंग) में छात्रों की संख्या बढ़ने से नये विद्यार्थियों के प्रवेश में कठिनाई आने लगी। इस समस्या के समाधान हेतु विजय चौक कल्याण भवन के महन्त नृसिंहदास महाराज तथा बोर्डिंग हाउस के जनरल मैनेजर मास्टर रघुवीर सिंह ने मोती चौक रामद्वारा के संत सुखराम दास से उपयुक्त भवन उपलब्ध करवाने में सहयोग हेतु आग्रह किया। उस समय राम स्नेही खेड़ापा सम्प्रदाय मोती चौक के संत सुखराम का, जोधपुर शहर के उत्तर में कागा की 'पहाड़ी' बेरियां पर एक रामद्वारा भवन स्थित था। जिस पर सन्त घमण्डी राम तपस्या करते थे। सन्त सुखराम दास महाराज ने इस रामद्वारे को छात्र व समाज हित में किसान बोर्डिंग हाउस को भेंट कर दिया। यहाँ पर पहाड़ी पर 10 छोटे-छोटे कमरों के भवन के साथ पहाड़ी की तलहटी में एक और भवन बना हुआ था जिसके साथ करीब-14 बीघा भूमि भी है। इस रामद्वारा भवन में सन् 1956 में छात्रावास शुरू किया गया जहाँ से कई छात्रों ने अध्ययन कर समाज का नाम रोशन किया है।

मास्टर रघुवीर सिंह ने इस छात्रावास का नाम 'बालसेवा सदन' रखा जिसका विवरण किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर, सन् 1956 के पंजीयन दस्तावेजों में उल्लिखित है। आरम्भिक दौर में यहाँ पर आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों को रखा जाता था और भोजन व्यवस्था किसान बोर्डिंग के की जाती थी। धीरे-धीरे छात्र स्वयं भोजन बनाने लगे। सन् 1962 के बाद यहाँ पर रह रहे छात्र मूलसिंह जाखड़ (बेसारनिया, बाड़मेर) को व्यवस्था संचालन की जिम्मेदारी दी गई। वे उस समय वकालात की पढ़ाई कर रहे थे। सन् 1964 से 1966 तक पूरनराम बेन्दा (रीगण, लाडनू) ने वायु सेना में सेवारत रहते हुए व्यवस्था सम्भाली। पूरनराम के प्रयासों से छात्रावास के पास स्थित निजी पांच प्लोट खरीदे गये तथा रजिस्ट्री जाट समाज के नाम करवाई गयी। इस छात्रावास में पानी तथा बिजली का अभाव था जिसकी पूर्ति विजय पूनिया ने करवाई। समय-समय पर समाज के प्रबुद्ध जनों के सहयोग से छात्रावास की भूमि को सुरक्षित रखा जा सका। इस कार्य में राजेन्द्र चौधरी (पूर्व मंत्री), हीरालाल भादू, महिपाल मदेरणा (पूर्व मंत्री), बद्रीराम जाखड़, अमिता चौधरी आदि का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष योगदान रहा। लम्बे समय तक यह छात्रावास किसान बोर्डिंग हाउस के अधीन ही संचालित होता रहा। 2002 ई. में पूरनराम बेन्दा ने इस छात्रावास के संचालन हेतु अलग से 'किसान तेजा रामगढ़ी शिक्षण संस्थान, कागा, जोधपुर' के नाम से संस्थान का पंजीयन 28 फरवरी 2002 को करवाया (रजि. न. 269/जोध./2001-2002)

लम्बे समय तक यहाँ पर छात्रावास का विकास नहीं होने पर पूर्व आई.पी. एस. श्री बी.आर. ग्वाला के नेतृत्व में नये भवन के निर्माण का निर्णय 2010 ई. में लिया गया। दिनांक 23 दिसम्बर 2010 को रेण पीठाधीश्वर हरिनारायण शास्त्री के पावन सान्निध्य एवं महिपाल मदेरणा (तत्कालीन जल संसाधन मंत्री, राजस्थान सरकार) के मु'य आतिथ्य में 'मास्टर रघुवीर सिंह चौधरी छात्रावास भवन' का शिलान्यास हुआ। जाट समाज के भामाशाहों के सहयोग से दिनांक 1 अगस्त 2015 को चार मंजिला भवन बनकर तैयार हुआ जिसमें प्रत्येक मंजिल पर 16 कमरे बने हुए हैं।

नये छात्रावास निर्माण में भामाशाह मगराज सियाग (बिंजवाड़िया, बिलाड़ा) ने अकेले 21 लाख रुपए का महत्वपूर्ण सहयोग किया। छात्रावास संरक्षक भीयाराम ग्वाला (सेवानिवृत्त आई.पी.एस.) ने अठारह लाख तथा हनुमान राम चौधरी (केरू) ने पाँच लाख का आर्थिक सहयोग दिया। भव्य छात्रावास भवन के निर्माण में सैकड़ों भामाशाहों ने आर्थिक सहयोग किया जिससे भावी पीढ़ी के लिए आधुनिक सुविधाओं वाला यह आवासीय छात्रावास बनाना संभव हुआ। इसके प्रत्येक कक्ष में 3 छात्र आवास कर सकते

हैं। करीब 200 छात्रों के आवास की सुविधा है। यहाँ पर नियमित अध्ययन करने वाले छात्रों के अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्र भी रहते हैं। छात्रावास में आधुनिक भोजनशाला तथा सभा कक्ष भी बनकर तैयार हो चुका है। वर्तमान में छात्रों के अध्ययन हेतु यह आवासीय छात्रावास सुचारु रूप से संचालित हो रहा है।

किसान तेजा रामगढी शिक्षण संस्थान की वर्तमान कार्यकारिणी के अध्यक्ष प्रदीप बेनीवाल (पार्षद, दक्षिण नगर निगम, जोधपुर), उपाध्यक्ष— हनुमान राम चौधरी सेवदा (केरू), सचिव— दयाल राम चौधरी, कोषाध्यक्ष— सांवल राम डोगियाल (मांडियाई) हैं। छात्रावास के संचालन का कार्य वार्डन पूर्व सैनिक लूम्बाराम सिंग (कांटिया, नागौर) कर रहे हैं।

डॉ. गंगाराम जाखड़, एच.आर इसराण जोगाराम सारण की पुस्तक

“मारवाड़ जाट समाजिक एवं शैक्षिक जागृति” से साभार